संगीत त्रिवेणी

(गायन-वादन-नर्तन)

उत्तर भारतीय संगीत (गायन, वादन, नृत्य) के विविध आयाम

डॉ. आनंद तिवारी
प्राचार्य/संरक्षक

डॉ. हरिओम सोनी
सम्पादक

डॉ. अपर्णा चाचोंदिया
सम्पादक

आयोजक-संगीत एवं नृत्य विभाग

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय सागर (म.प्र.)

प्रकाशक : रागी पब्लिकेशन एण्ड इंटरप्राइजेज
चैतन्य हास्पिटल के पास में, सैनी के कुआँ के सामने,
वृन्दावन वार्ड, तिली रोड, सागर (म.प्र.)
ई मेल : ragipublicationandenterprises@gmail.com
सम्पर्क : 9039515004

प्रकाशन वर्ष : 2023

संस्करण : प्रथम

मूल्य : 300/-

सम्पादक मंडल :
डॉ. हरिओम सोनी
डॉ अपर्णा चाचोंदिया

Book Name-Sangeet Triveni
ISBN.No.-978-93-340-4240-5

अक्षर संयोजन एवं मुद्रण
रॉयल कम्प्यूटर्स,
वनवे परकोटा रोड, सागर (म.प्र.)
मो. : 9425452106

नोट–प्रस्तुत प्रोसिडिंग में शामिल किये गए समस्त शोध पत्रों की सामग्री एवं तथ्यों की सम्पूर्ण जबाबदारी लेखकों की होगी इस हेतु सम्पादक या समिति किसी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होगी।

अनुक्रमणिका

क्र	विषय	पृष्ठ
1.	भारतीय राग चिकित्सा – समालोचनात्मक विश्लेषण **डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर**	01
2.	नृत्यकला एवं रासलीला **डॉ. अपर्णा चाचोंदिया**	07
3.	वर्तमान परिवेश में संगीत घरानों की प्रासंगिकता **डा. प्रेम कुमार चतुर्वेदी**	11
4.	विकसित अवनद्य वाद्य – तबला (एक दृष्टिपात) **डॉ. विभूति मलिक**	17
5.	नृत्य कला में नायिका भेद **प्रो. डॉ. नीता गहरवार**	22
6.	संगीत में घराने – गुण एवं दोष **प्रो. डॉ. अलकनंदा पलनीटकर**	26
7.	गुप्त कालीन संगीत, गायन एवं वादन **प्रॉफसर नवीन गिडियन**	30
8.	बंदिश एवं नवसृजन **पंडित देवेन्द्र वर्मा**	34
9.	हिन्दी के गीतों में संगीत **डॉ. नरेन्द्र सिंह ठाकुर,**	43
10.	देश के सामाजिक आर्थिक विकास में संगीत कलाकारों की भूमिका **प्रोफेसर नित्यानंद चौधरी**	46
11.	प्राचीन ताल पद्धति का विश्लेषणात्मक विवेचन **डॉ. गुलशन सक्सेना**	51
12.	ताल के दस प्राण **हरविंदर बीर कौर**	55
13.	संगीत, संस्कृति और समाज **डॉ. मालती दुबे**	59
14.	संगीत कला का व्यवसायीकरण **डॉ. प्रियंका शेण्डे**	61
15.	कत्थक नृत्य में नायिकाओं की अष्टावस्था **प्रो. वन्दना चौबे**	65

16. कला का व्यवसायीकरण और सोशल मीडिया की भूमिका — 72
एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
डॉ. रश्मि शर्मा

17. संगीत संस्कृति और समाज — 78
डॉ. डी.के. गुप्ता

18. **मानव जीवन में संगीत और स्वास्थ्य** — 80
श्रीमती रागिनी श्रीवास्तव

19. भारतीय संगीत के विविध आयामों में महिलाओं की स्थिति और भूमिका — 84
प्रीति वर्मा

20. विभिन्न संगीत शैलियों के साथ विभिन्न तालों का सामांजस्य — 88
शैलेन्द्र सिंह राजपूत

21. संगीत में अवनद्ध वाद्यों का विकास एवं महत्व संदर्भ–तबला — 92
शैलेन्द्र वर्मा/डॉ. रवि कुमार पण्डोले

22. भारतीय संगीत गायन के विविध आयाम — 96
डॉ. जितेन्द्र कुमार शुक्ला

23. हिन्दी साहित्य में चौमासा (आषाढ़, सावन, भाद्रपद, अश्विन) — 100
लोक, ललित का मूल आधार
राघवेन्द्र प्रताप सिंह/डॉ. सुजीत देवघरिया

24. युवा पीढ़ी का पाश्चात्य संगीत की ओर रूझान — 106
कृष्ण कुमार कटारे

25. महिलाओं से संबंधित मनोविकारों के निवारण में — 108
संगीत चिकित्सा की प्रासंगिकता
वर्षा मीणा/डॉ. संतोष मीणा

26. भारतीय रंगमंच का स्वरूप एवं सांस्कृतिक परंपरा — 114
अंजलि वर्मा

27. तबले की उपशास्त्रीय वादन शैली — 117
डॉ राहुल स्वर्णकार

28. बुन्देली लोकगीतों में सांस्कृतिक चेतना — 123
डॉ. सरिता जैन

29. मनोचिकित्सा में संगीत का प्रयोग — 125
डॉ. हरीश वर्मा

30. अभ्यास एवं साधना (आध्यात्मिक अध्ययन) — 128
आकाश जैन

31. सितार वादन करने हेतु तकनीक का महत्व–एक अध्ययन — 132
डॉ. अमनदीप कौर

32. शास्त्रीय संगीत, नृत्य में रोजगार के अवसर 138
गरिमा भार्गव

33. कथक नृत्य की धार्मिक एवं आध्यात्मिक पृष्ठभूमि 140
डॉ. योगिता मंडलिक

34. धार्मिक पृष्ठभूमि पर अवस्थित नृत्यकला 142
कल्पना कुमारी

35. उत्तर भारतीय संगीत (गायन, वादन, नृत्य) 146
के विविध आयाम संगीत, संस्कृति और समाज
अनुराग गुरु

36. मध्यभारत के प्रमुख जनजातीय नृत्यों में अवनध वाद्यों की भूमिका 149
सरगम खान

37. संगीत संस्कृति और समाज 154
अमोल शेषराव गवई

38. संगीत और साहित्य का अंर्न्तसंबंध 156
सत्येंद्र सिंह पटेल

39. धार्मिक पृष्ठभूमि पर अवस्थित नृत्यकला कथक नृत्य एवं ईश्वर उपासना 159
सुश्री योगिता सरोया

40. विभिन्न ग्रंथों में वर्णित अवनद्य वाद्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन 161
तेजस्स पटैल

41. कथक नृत्य प्रस्तुति में आहार्य अभिनय 166
डॉ. संगीता ठाकुर

42. भारतीय शास्त्रीय नृत्यों में प्रयोगधर्मिता कथक नृत्य के संदर्भ में 169
डॉ. अमित साखरे

43. संगीत, संस्कृति एवं समाज 172
डॉ. रविन्द्र कुमार ध्रुवे

44. संगीत का स्वास्थ्य में योगदान 174
पायल कुमारी

45. कथक नृत्य प्रदर्शन में तुलसीकृत रचनाओं की उपादेयता 177
सुश्री रेखा मालवीय

46. ताल के दस प्राण 180
डॉ. कृष्णा बाला सिंह

47. धार्मिक पृष्टभूमि पर अवस्थित कथक नृत्य 185
डॉ नरेन्द्र कुमार ध्रुव

48.	गुप्त कालीन नृत्य एवं अभिनय **डॉ. अंजलि दुबे**	188
49.	मार्ग और देशी संगीत कलाऐं **विशाखा तिवारी मिश्रा**	191
50.	तबला स्वतंत्र वादन में गत वादन का स्वरुप एवं महत्व (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन) **गगन राज/आकाश जैन**	196
51.	संगीत के अध्ययन–अध्यापन में ई–संसाधनों की भूमिका **मितेन्द्र सिंह सेंगर**	200
52.	New teaching policy 2020 and today's student with music subject **Dr. HARIOM SONI**	206
53	CHEMISTRY BEHIND THE MUSIC **Dr. A.H. Ansari**	208
54.	The Dynamism of Indian painting under the patronage of the Mughals **Dr. Ashish Kumar Chachondia**	211
55.	Interrelation between music and chemistry: An Overview **Dr. Santosh Narayan Chadar**	215
56.	Music and Mental Health **Mayuresh Namdeo/ Dr. Santosh Kumar Gupta**	219
57.	Creativity in Choreography by Kumudini Lakhia, an Initial Journey **Jayti Brahmbhatt / Prof. Vandana Chaubey**	225
58.	DANCE BASED ON RELIGIOUS BACKGROUND **Kavisha Sabharwal**	228
59.	Personality Development and Employment Prospects Through Classical Dance **Mrs. Manjusha Rajas Johari / Prof. Vandana Chaubey**	232
60.	Use of music in EFL [English as a foreign language] **Mrs. Vibha Soni**	235
61.	Contribution of Women in Dance **Arshdeep Kaur Bhatti**	237
62.	Utility of Music in Indian Society **Priyam Chaturvedi**	241
63.	Music as an incredible medicine: A cure for wide range of diseases and disorders **Vaishali Prajapati**	245
64.	Psychology and Music Therapy **Koustubh Pare**	251
65.	The Importance of Music Education in India **Vishal V. Korde**	254
66.	Ten Elements of Taal (Taal Ke Das Pran) **Sompura Krupal Chetanbhai**	259

हिन्दी के गीतों में संगीत

डॉ. नरेन्द्र सिंह ठाकुर,
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर, उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

जयदेव का गीत गोविंद

यह काव्य रागों पर आधारित है, संगीत का प्रत्येक पक्ष इसमें है। प्रबंध और अष्ट पदों का प्रयोग–संगीत की दृष्टि से गीत गोविन्द में 24 प्रबंध या अष्ट पंक्तियॉ है, जो 'अष्ट पदियों' के नाम से लोकप्रिय हुई, यही राग और ताल का आधार हैं, ये अष्ट पदियॉ मात्रा वृत्तों में रचित हैं, ये द्विधातु प्रबंध हैं जो उदग्रह तथा ध्रुव में विभाजित हैं। कर्नाटक संगीत में ये पल्लवी और चरण में विभाजित हैं।

जयदेव इन्हें 'पदावली' कहा करते थे। उनें गीत गोविंद में बसन्त, रामकिरी, गुर्जरी, कर्णाटक, देशारूप, देशव राड़ी, गौड मालव, देशांक, भैरवी, बरारि, विभास, आदि राग और रूपक ताल, प्रति मण्ठ ताल, यति ताल, एक ताल, आडव ताल आदि तालों का प्रयोग हुआ है। आज संगीत में मुख्य जितनी तालें प्रचलित हैं, वे प्रायः सभी 'गीत गोविंद' में है।

दरअसल, जयदेव की पत्नी 'पद्मावती' एक शास्त्रीय नर्तकी थी, जयदेव अपने गीत, संगीत के आध ाार पर लिखते, उन्हें संगीत बद्ध करते और वे इसका प्रदर्शन मंदिरों में किया करते थे। पूर्वी क्षेत्र की यात्रा करने वाले वैष्णव भक्त यात्री 'गीत गोविंद' पूर्वी क्षेत्र से गुजरात लाये। जयदेव की ये 'अष्टपदियां' उड़ीसा में समकालीन नवशास्त्रीय ओडिसी नृत्य का अंग बनकर भी प्रसिद्ध हुईं। मणिपुर में अभी भी रथयात्रा के समय अष्टपदी का गायन कर नृत्य किया जाता है और गीत गोविंद के अंतिम पद को गाकर समापन किया जाता है। गीत गोविंद के प्रत्येक अक्षर में संगीत है और उनके गीतों में इन अक्षरों का संयोजन जिस भाव प्रवणता एवं सगीतात्मकता से किया गया है, वह संस्कृत साहित्य में अप्रतिम है।1 गीत गोविंद को 'पास्टोरल ड्रामा' अर्थात 'गोपनाट्य' कहा गया है।2

मणिपुरी संगीत, ओड़िसी, कुचिपुड़ी से होता हुआ गीत गोविंद का प्रभाव 'केरल' पर भी पड़ा। यहां तक कि इसमें उत्तर भारतीय विभिन्न संगीत और नृत्य शैलियों को प्रभावित किया।

हिन्दी के भक्ति काल विशेष कर कृष्ण काव्य के 'पद' और संगीत पर इसका भरपूर प्रभाव है, जिसका श्रेय चैतन्य महाप्रभु को जाता है।

विद्यापति पर गीत गोविंद का प्रभाव

"गीत गोविंद" के रचनाकार जयदेव की मधुर पदावली पढ़कर जैसा अनुभव होता है, वैसा ही विद्यापति की पदावली पढ़कर अपनी कोकिल कंठता के कारण ही उन्हें मैथिल कोकिल कहा जाता है।"3

जयदेव के बाद उसी प्रकार की पदावली बंगाल के चंडीदास और मिथिला के विद्यापति ने लिखी। पूर्व से पश्चिम तक संपूर्ण भारत में ऐसे पद व्याप्त थे।4

हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं कि लीला के यह पद कब लिखे जाने लगे? निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता, 10वीं, 11वीं सदी में जयदेव के गीत गोविंद से इस परंपरा की शुरुआत मानी जा सकती है।

विद्यापति की पदावली श्रेष्ठ गीत काव्य है। इनमें भावों की लयात्मक गति के साथ–साथ काव्य और संगीत का अनूठा सामंजस्य है। इनके असख्य गीत गेयता और संगीतात्मकता के कारण लोक कंठ में बस गए। विद्यापति का प्रभाव मैथिली के कवि गोविंद दास एवं हरिदास पर भी दिखाई देता है। सूरदास के पदों पर भी विद्यापति के गीतों का प्रभाव स्पष्ट है। यहां तक की निराला के गीतों पर भी विद्यापति की संगीतात्मकता का प्रभाव देखा जा सकता है। विद्यापति पदावली में जो संगीत है वह उसके काव्य पक्ष से ज्यादा प्रभावी बन पड़ा है। उसकी गीतात्मकता उसके काव्य से इस तरह एकाकार हो जाती है, मानो यह रचना गाने के लिए ही बनी है। भावों का प्रवाह पदावली के गीतों में संगीत की संरचना करता है। गीतिकाव्य की उत्पत्ति की चर्चा करते हुए डॉ. शिव प्रसाद सिंह लिखते हैं। 'काव्य की अन्य विधाओं की तरह गीतिकाव्य क्योंकि सचेत बुद्धि व्यापार से उत्पन्न वस्तु नहीं है इसलिए आदिमानव के प्रति पुरातन और आरंभिक भावों के साथ ही गीतिकाव्य का जन्म हुआ। हालांकि यह कहना कठिन है कि गीति काव्य आविर्भाव का निश्चित काल क्या है किंतु इतना तो सहज अनुमेय है कि संवेगों की तीव्रता और उद्वेलन की सामान्य परिस्थितियों में भावाकुल अभिव्यक्ति ने 'स्वरों' का रूप लिया–ऐसे शब्द और अर्थ तथा उनकी पुनरावृत्ति–यही गीतिकाव्य है।5

विद्यापति के गीत एक तरफ 'लोकगीतों' के करीब है तो दूसरी तरफ उनमें शास्त्रीयता भी है। मालव राग, घनाछरी, सामरी, अहिरानी, केदार, कानड़ा, कोलाव, सारंगी, गुंजरी, बसंत, विभास, नटराग, ललित आदि रागों का प्रयोग विद्यापति अपने गीतों में करते हैं।

सूरदास के गीत

विद्यापति के गीतों का प्रभाव सूरदास पर स्पष्ट देखा जा सकता है – आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं "जयदेव की देववाणी की स्निग्ध पीयूष धारा जो काल की कठोरता मैं दब गई थी, अवकाश पाते ही लोक भाषा की सरसता में परिणित होकर मिथिला की अमराईयों में विद्यापति के कंठ में प्रकट हुई और आगे चलकर ब्रज के कुरील कुंजों के बीच मुरझाए मनो को सींचने लगी, आचार्यों की छाप लगी हुई 'आठ बीणाएं श्री .ष्ण की प्रेम लीला का कीर्तन करने उठी, जिनमें सबसे सुरीली और मधुर झंकार अंधे कवि सूरदास की वीणा की थी।"

वैष्णव संप्रदाय के भक्त कवियों के बारे में कहा जाता है कि वे 'भक्त पहले थे कवि बाद में इसे इस तरह कहें कि वे भक्त पहले थे और भक्ति का गायन किया करते थे वे ऊंचे दर्जे के संगीतकार थे, वे भजन रचते, गाते और नृत्य करते थे। कहा जाता है कि सूरदास जब भजन गाने बैठते थे तो उनके गुरु वल्लभाचार्य मग्न होकर नृत्य करने लगते थे – यह प्रक्रिया लगातार कई दिन और कई रात चलती रहती थी, ना सूरदास को समय की सुध रहती ना वल्लभाचार्य को। वैष्णव संप्रदाय के ही महान गुरु स्वामी श्री हरिदास जी के शिष्यों में तो 'तानसेन' जैसे संगीतज्ञों कि गिनती होती है। जब शब्द रस के अनुकूल हो। राग अर्थ के अनुकूल हो तो जो संगीत बनता है वह 'परमानंद' की प्राप्ति का साधन बनता है। 'नाद ब्रह्म' की खोज को सार्थक करता है। कहा गया है,

नादेन व्यंजते वर्ण पदं वर्णात् पदात् वचः।
बचसो व्यवहारोदयं नादाधीनमितम् जगतः।।

सूर के पदों में संगीत तत्व की उपस्थिति पर रामचंद्र शुक्ल कहते हैं, "सूर की रचना जयदेव और विद्यापति के गीत काव्यों की शैली पर है, जिसमें सुर और लय के सौंदर्य या माधुर्य का भी इस परिपाक

में बहुत कुछ योग रहता है। सूरसागर में कोई राग या रागिनी छूटी ना होगी, इससे यह संगीत प्रेमियों के लिए भी बड़ा भारी खजाना है।" भक्ति काल के संदर्भ में डॉ. रामविलास शर्मा ने भी काव्य और संगीत के गहरे संबंधों की पड़ताल की है। वे लिखते हैं "मुख्य बात यह है कि सूरदास के लिए गायन, वादन और नृत्य, तीनों संगीत की समन्वित इकाई है।"6

डॉ. अंबाशंकर नागर लिखते हैं की "सूर उत्कृष्ट कोटि के संगीतज्ञ थे उन्होंने पदों की रचना राग रागनियां एवं तालों के आधार पर की थी। वह कीर्तनिये थे पुष्टिमार्गी सेवा पद्धति में अष्टयाम सेवा एवं कीर्तन का विशेष विधान है। सूर ने विशेष तथा संकीर्तन के हेतु ही विभिन्न रागनियों एवं तालों में श्रीकृष्ण की लीलाओं के 'धुव्रपदों' की रचना की थी।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की गीतिका के गीत

संभवतः जब कोई कवि गीत रचना करता है तो उसमें गेयता, लय और संगीत स्वाभाविक रूप से आता है। खड़ी बोली की हिंदी कविता में निराला ऐसे अकेले कवि हैं जिन्होंने सप्रयास हिंदी में रचना की और शास्त्रानुसार गीतों की रचना कर एक संग्रह रचा। 'गीतिका' उनकी ऐसी ही कृति है। बांग्ला की स्वरलिपि के ऊपर अंग्रेजी संगीत का प्रभाव देखा जा सकता है। निराला पर 'बंगाल' का प्रभाव स्पष्ट है पर जब उन्होंने 'गीतिका' की रचना की तो उसकी 'भूमिका' में लिखा–"अंग्रेजी" संगीत की पूरी नकल करने से भारत के कानों को कभी तृप्ति होगी, यह संदिग्ध है कारण भारतीय संगीत की स्वर मैत्री में जो स्वर प्रतिकूल समझे जाते हैं, वह अंग्रेजी संगीत में लगते हैं।"7

निराला की 'गीतिका' के गीतों का आधार संगीत तत्व है, लेकिन ऐसा नहीं है कि उसमें काव्य तत्व की कमी है, इन गीतों में काव्य तत्व भी उचित मात्रा में है। निराला अपने गीतों में 'शब्द ध्वनि' का विशेष प्रयोग करते हैं और गीतों में संगीत भर देते हैं। कविता और संगीत का ऐसा समन्वय हिंदी कविता में निराला के अतिरिक्त अन्यत्र दुर्लभ है। निराला कहते हैं उम्र के 32 साल बंगाल में बीते, बाद में अवधि, बैसवाड़ा और कन्नौजिया संस्कारों का प्रभाव मेरे मन पर पड़ा। इन संस्कारों के फलस्वरुप हिंदी संगीत की शब्दावली और गाने का ढंग दोनों मुझे खटकते रहे मुझे ऐसा मालूम होने लगा की खड़ी बोली की संस्कृति जब तक संसार की अच्छी–अच्छी सौंदर्य भावनाओं से युक्त ना होगी, वह समर्थ ना होगी मैंने अपनी शब्दावली को काव्य के स्वर से भी मुखर करने की कोशिश की है। संगीत के छंद शास्त्र की अनुवर्तिता की है। जो संगीत कोमल, मधुर और उच्च भाव तक अनुकूल भाषा और प्रकाशन से व्यक्त होता है, उसके साफल्य कि मैंने कोशिश की है। तालें प्रायः सभी प्रचलित हैं प्राचीन ढंग रहने पर भी वह नवीन कंठ से नया रंग पैदा करेंगी। नंददुलारे वाजपेई 'गीतिका' के गीतों के बारे में लिखते हैं कि – "पाश्चात्य कला, परिपाटी, स्वर तथा संगीत का अभ्यास भी इन रचनाओं में लक्षित है।"

संदर्भ सूची–

1. डॉ. ए.बी. कीथ, संस्कृत साहित्य का इतिहास।
2. विलियम जोंस, आनंद म्यूजिकल मोड्स ऑफ द हिन्दूज।
3. हरिऔद्य–विद्यापति पदावली।
4. हजारी प्रसाद द्विवेदी–हिंदी साहित्य का आदिकाल।
5. डॉ. शिवप्रसाद सिंह विद्यापति
6. डॉ. रामविलास शर्मा, भारतीय साहित्य की भूमिका
7. निराला गीतिका की भूमिका